१

चिड़िया का गीत

कविता का सारांश

यह कविता एक चिड़िया के माध्यम से संसार को जानने-समझने की यात्रा को दर्शाती है। शुरू में चिड़िया को अपना अंडेनुमा छोटा-सा घर ही पूरा संसार लगता है। जैसे-जैसे वह बाहर निकलती है—शाखों पर बैठती है, उड़ान भरती है—वैसे-वैसे उसकी समझ बढ़ती है और उसे महसूस होता है कि संसार बहुत बड़ा और सुंदर है।

कविता के माध्यम से बच्चों को यह संदेश मिलता है कि जैसे चिड़िया उड़कर अपने अनुभवों से संसार को पहचानती है, वैसे ही हम भी धीरे-धीरे सीखते, बढ़ते और समझते हैं। कविता में कल्पना, भावनाएँ और प्रकृति के प्रति प्यार को सुंदरता से व्यक्त किया गया है।

www.onepointlearning.com

नए शब्द

आकार	:-	रूप या शेप
शाखा	:-	पेड़ की डाली
सुकुमार	:-	कोमल, नाजुक
तिनका	:-	सूखी घास या लकड़ी का छोटा टुकड़ा
पंख पसारना	:-	पंख फैलाना, उड़ान भरने की तैयारी करना
चहचहाना	:-	पक्षियों की मीठी आवाजें निकालना
नीड़	:-	घोंसला, पक्षियों का घर
कल्पना	:-	सोच या विचार की उड़ान
अनुभव	:-	खुद की देखी, समझी या सीखी बात
संसार	:-	दुनिया, विश्व

One Point Learning

बातचीत के लिए

1. पशु-पक्षियों के लिए घर आवश्यक है या नहीं? कारण भी बताइए।

उत्तर: हाँ, पशु-पक्षियों के लिए घर आवश्यक होता है।

कारण – घर उन्हें गर्मी, सर्दी, बारिश से बचाता है और वे वहाँ आराम से सो सकते हैं, अपने बच्चों की देखभाल कर सकते हैं और सुरक्षित महसूस करते हैं।

2. आपके परिवार के सदस्य घर से बाहर क्यों जाते हैं?

उत्तर: मेरे परिवार के सदस्य काम, स्कूल, बाज़ार, या ज़रूरी कामों के लिए घर से बाहर जाते हैं।

3. जब परिवार के सदस्य बाहर जाते हैं या बाहर से आते हैं तो आपको कैसा लगता है और क्यों?

उत्तर: जब वे बाहर जाते हैं तो मैं उन्हें मिस करता/करती हूँ, और जब वे वापस आते हैं तो बहुत खुशी होती है, क्योंकि घर में फिर से सब साथ होते हैं।

4. जब कोई अतिथि आपके घर आता है या आप किसी संबंधी के यहाँ जाते हैं तो आपको कैसा लगता है?

उत्तर: मुझे बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि हम मिलकर बातें करते हैं, खेलते हैं और अच्छा समय बिताते हैं।

5. क्या आपको लगता है कि पक्षियों की तरह हम भी धीरे-धीरे बड़े होते हैं और फिर उनकी तरह ही संसार देखते हैं? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर: हाँ, मुझे भी ऐसा लगता है।

- जब मैं छोटा/छोटी था/थी तो मुझे लगता था कि मेरा घर ही सब कुछ है।
- लेकिन अब जब मैं स्कूल जाता/जाती हूँ, घूमने जाता/जाती हूँ, तो मुझे पता चलता है कि दुनिया बहुत बड़ी है।
- मैंने पहली बार जब हवाई जहाज़ देखा तो मुझे बहुत अचरज हुआ – तभी समझ में आया कि संसार सचमुच बहुत बड़ा है।

कविता की बात

1. नीचे दिए गए प्रश्नों में चार विकल्प दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न में एक या एक से अधिक उत्तर सही हो सकते हैं। सही उत्तर चुनिए:

(क) घोंसले से संबंधित उपयुक्त वाक्य चुनिए —

घोंसला पक्षियों का घर होता है।	☑
घोंसला सूखे तिनकों से बनाया जाता है।	☑
पक्षियों का घोंसला केवल पेड़ों पर होता है।	☐
कुछ पक्षियों का घोंसला हमारे घरों में भी होता है।	☑

www.onepointlearning.com
One Point Learning

(ख) कविता में 'अंडे जैसा था आकार' का प्रयोग निम्न में से किसके लिए किया गया है?

- संसार ☐
- आकाश ☐
- घर ☑
- घोंसला ☐

(ग) 'तब मैं यही समझती थी, बस इतना-सा ही है संसार' — इन पंक्तियों में 'इतना-सा' का अर्थ क्या है?

- बहुत छोटा ☑
- बहुत बड़ा ☐
- बहुत लंबा ☐
- रंग-बिरंगा ☐

2. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों का मिलान उनके नीचे दी गई उपयुक्त पंक्तियों से कीजिए।

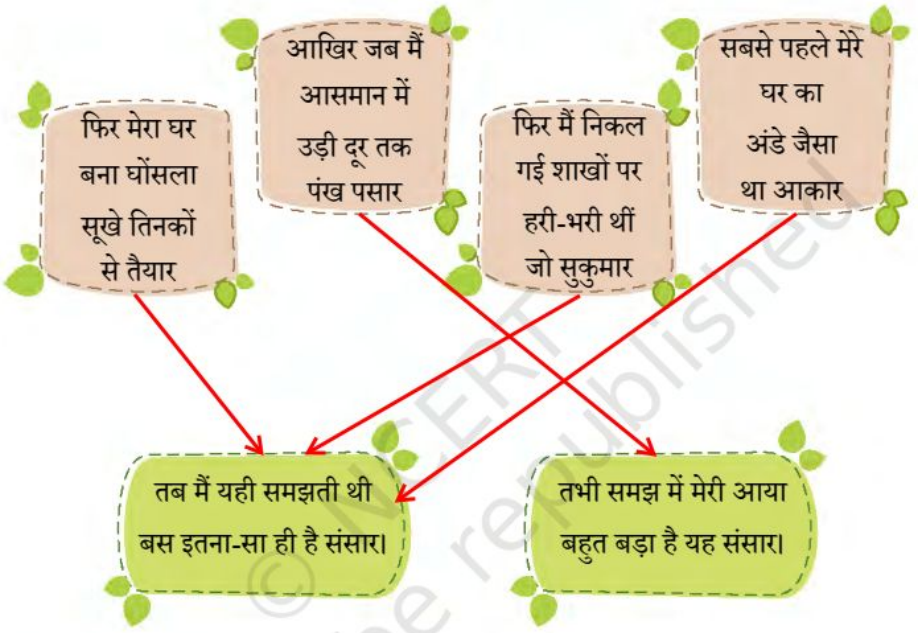

सोचिए और लिखिए

1. चिड़िया को यह संसार कब-कब छोटा लगा?

उत्तर: जब चिड़िया अंडे के आकार जैसे घर में थी, शाखों पर बैठी थी और जब उसका घर सूखे तिनकों से बना घोंसला बना था — तब उसे संसार छोटा लगा।

2. खुले आकाश में उड़ते समय चिड़िया ने क्या-क्या देखा होगा जिससे उसे लगा कि संसार बहुत बड़ा है?

उत्तर: चिड़िया ने आकाश में उड़ते हुए पहाड़, जंगल, नदियाँ, खेत, गाँव, शहर, समुद्र, लोग और रास्ते देखे होंगे। इन सबको देखकर उसे समझ आया कि संसार बहुत बड़ा है।

www.onepointlearning.com
© NCERT not to be republished
One Point Learning

3. प्रायः सुबह-शाम पक्षियों की चहचहाहट (कलरव) सुनाई देती है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: पक्षी सुबह नई शुरुआत पर खुश होकर और शाम को दिनभर के अनुभवों के बाद संवाद करते हैं। यह उनकी आपसी बातचीत और खुशी को दिखाता है।

समझ और अनुभव

1. जब कोई छोटी चिड़िया घोंसले से बाहर आती है तो उसे लगता है कि संसार बहुत बड़ा है।
क्या आपको भी घर से बाहर निकलते समय ऐसा ही अनुभव होता है? क्यों?

उत्तर: हाँ, जब मैं घर से बाहर निकलता/निकलती हूँ, तो मुझे भी लगता है कि संसार बहुत बड़ा है। बाहर बहुत सारी चीज़ें देखने को मिलती हैं – जैसे सड़कें, गाड़ियाँ, पेड़, लोग, दुकानें और स्कूल। घर में तो सब छोटा लगता है, पर बाहर जाकर लगता है कि दुनिया बहुत बड़ी और रंग-बिरंगी है।

2. एक पक्षी की तरह आप भी धीरे-धीरे बड़े हो रहे हैं। अब तक आपके भीतर भी कई परिवर्तन आए होंगे। नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर अपने भीतर आए परिवर्तनों को लिखिए —

परिवर्तन का क्षेत्र	मेरा अनुभव
• शारीरिक परिवर्तन	- मेरी हाइट बढ़ गई है, अब मैं पहले से तेज़ दौड़ सकता/सकती हूँ।
• सोच में परिवर्तन	- अब मैं हर बात को पहले से समझदारी से सोचता/सोचती हूँ।
• समझ में परिवर्तन	- अब मैं यह जानता/जानती हूँ कि क्या सही है और क्या गलत।
• खान-पान में परिवर्तन	- अब मैं सब्ज़ियाँ और हेल्दी खाना पसंद करने लगा/लगी हूँ।
• रुचियाँ	- मुझे अब कहानियाँ पढ़ना और पेंटिंग करना बहुत अच्छा लगता है।
• खेल	- पहले मैं सिर्फ़ घर के अंदर खेलता/खेलती थी, अब बाहर जाकर फुटबॉल और बैडमिंटन भी खेलता/खेलती हूँ।
• गीत-संगीत	- मुझे अब नए गाने और स्कूल की कविताएँ गाना अच्छा लगता है।
• पढ़ना-लिखना	- अब मैं अच्छी तरह से कहानियाँ पढ़ और लिख सकता/सकती हूँ।
• नृत्य और अभिनय	- अब मैं स्कूल के कार्यक्रमों में डांस और अभिनय भी करता/करती हूँ।

यदि आपने इन सबके अलावा भी कोई अन्य परिवर्तन महसूस किया हो, तो उसे भी कक्षा में साझा कीजिए।
अन्य परिवर्तन: अब मैं लोगों से अच्छे से बात करता/करती हूँ और अपनी चीज़ों का ध्यान खुद रखने लगा/लगी हूँ।

3. पहले चिड़िया को लगता था कि यह संसार बहुत छोटा है, लेकिन जब उसने उड़ान भरी तो उसे पता चला कि यह तो बहुत बड़ा है।
ऐसा आपको कब लगा, जब आपने इनमें से किसी एक चीज़ को पहली बार देखा —

- रेलगाड़ी
- मेट्रो ट्रेन
- मॉल
- समुद्र
- पहाड़
- हवाई जहाज़
- जलयान
- जंगल
- खेत
- चार या छह पहियों वाली सड़कें
- रेगिस्तान या मैदान
- नदी

www.onepointlearning.com
One Point Learning

उत्तर: जब मैंने पहली बार रेलगाड़ी देखी, तो मैं बहुत हैरान रह गया/गई। वह बहुत लंबी और तेज़ थी। पहले मुझे लगता था कि सब कुछ पास-पास ही होता है, लेकिन रेलगाड़ी से दूर-दूर तक जाना संभव है – तब मुझे लगा कि यह दुनिया बहुत बड़ी है।

इनके अलावा यदि आपके कुछ और अनुभव हों, तो वे भी कक्षा में अवश्य साझा कीजिए।

उत्तर:

जब मैंने पहली बार हवाई जहाज़ देखा, तो मुझे बहुत अचरज हुआ।
वह बहुत बड़ा था और तेज़ आवाज़ के साथ आसमान में उड़ रहा था।
मैंने सोचा कि लोग इस पर चढ़कर कितनी दूर-दूर जगहों तक चले जाते होंगे।
पहले मुझे लगता था कि हमारा शहर ही सब कुछ है, लेकिन तब समझ आया कि दुनिया तो बहुत बड़ी है – और उसे देखने के लिए हमें उड़ना भी पड़ता है!
उस दिन मुझे चिड़िया की तरह उड़ने की इच्छा भी हुई।

चित्रों की भाषा

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। चित्र से मेल खाती कविता की कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के रूप में दी गई हैं। अब कविता की उपयुक्त पंक्तियों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

आखिर जब मैं आसमान में
उड़ी दूर तक पंख पसार
तभी समझ में मेरी आया
बहुत बड़ा है यह संसार।

सबसे पहले मेरे घर का,
अंडे जैसा था आकार।
तब मैं यही समझती थी —
बस इतना-सा ही है संसार।

अनुमान और कल्पना

1. कविता की पंक्ति है — "आख़िर जब मैं आसमान में, उड़ी दूर तक पंख पसार।"
   चिड़िया ने अंत में इतनी दूर तक उड़ान क्यों भरी होगी?

उत्तर: चिड़िया दुनिया को देखना चाहती थी। वह जानना चाहती थी कि उसके घोंसले के बाहर क्या-क्या है। नई-नई जगहों को देखने और अनुभव बढ़ाने के लिए उसने दूर तक उड़ान भरी।

www.onepointlearning.com
One Point Learning
Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

2. पक्षी खुले आकाश में बहुत दूर तक उड़ते हैं। इतनी लंबी दूरी, हजारों पेड़ों और सैकड़ों घोंसलों के बीच वे अपना घोंसला कैसे ढूंढ़ लेते होंगे?

उत्तर: पक्षियों की स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है। वे अपने घोंसले के आसपास की जगहों को पहचान कर रास्ता याद रखते हैं। कुछ पक्षी सूरज की दिशा, हवा और पेड़ों की गंध से भी पहचान कर अपना घोंसला ढूंढ़ लेते हैं।

3. पक्षियों ने आकाश में उड़कर जाना कि संसार बहुत बड़ा है। हमारे पूर्वजों को यह बात कैसे पता चली होगी?

उत्तर: हमारे पूर्वज जंगलों में घूमते थे, नदियों के किनारे बसते थे और लंबी यात्राएँ करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने नए स्थानों को देखा और अनुभव किया, जिससे उन्हें समझ आया कि यह संसार बहुत बड़ा है।

4. जब आप कहीं बाहर जाते हैं तो घर के बड़े-बुज़ुर्ग आपको कुछ निर्देश देकर भेजते हैं।
क्या पक्षियों के माता-पिता भी उन्हें उड़ने से पहले कुछ निर्देश देते होंगे?
अगर हाँ, तो वे निर्देश क्या-क्या हो सकते हैं?

उत्तर: हाँ, पक्षियों के माता-पिता भी शायद अपने बच्चों को उड़ने से पहले सावधानी बरतने की सीख देते होंगे, जैसे:

- बहुत दूर मत जाना।
- ऊँचाई पर ध्यान से उड़ना।
- बड़े पक्षियों से बचकर रहना।
- खाना ढूंढ़ते समय सतर्क रहना।
- सही समय पर वापस घोंसले में लौट आना।

www.onepointlearning.com

आकार–प्रकार

कविता में 'अंडे जैसा था आकार' का उल्लेख किया गया है। नीचे कुछ और चित्र दिए गए हैं जो अलग-अलग आकृतियों को दर्शाते हैं। प्रत्येक चित्र के नीचे उसका सही नाम लिखिए।
इस कार्य में आप अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता भी ले सकते हैं।

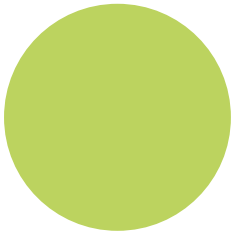

गोल

वर्गाकार

आयताकार

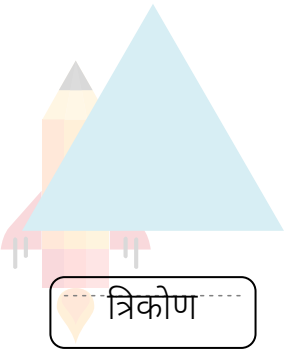

त्रिकोण

One Point Learning

भाषा की बात

1. "फिर मैं निकल गई शाखों पर, हरी-भरी थीं जो सुकुमार" कविता की इस पंक्ति में 'सुकुमार' शब्द आया है। यह 'सु' और 'कुमार' के मेल से बना है, जिसका अर्थ है — कोमल अंगों वाला। आप भी इसी प्रकार कुछ नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ खोजिए।

सु	कुमार	सुकुमार	कोमल अंगों वाला, नाज़ुक और प्यारा बच्चा
सु	योग्य	सुयोग्य	जो बहुत अच्छा और काम में होशियार हो
सु	यश	सुयश	अच्छी पहचान या अच्छी ख्याति
सु	कर्म	सुकर्म	अच्छे और भले काम
सु	वास	सुवास	मीठी और अच्छी खुशबू
सु	दर्शन	सुदर्शन	जो देखने में सुंदर लगे

2. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ रिक्त स्थान हैं और कुछ शब्द रेखांकित किए गए हैं। उन शब्दों से वाक्यों को पूरा कीजिए जो रेखांकित शब्दों के विलोम (विपरीत) अर्थ रखते हैं।

(क) सूखा और ___गीला___ कचरा अलग-अलग डिब्बों में डालें।
(ख) दिल्ली मेरे घर से ___दूर___ है, लेकिन गुवाहाटी पास में है।
(ग) अनवर कब ___आया___ और कब गया, पता ही नहीं चला।
(घ) कोई भी काम न तो बड़ा होता है और न ही ___छोटा___।

3. आइए, अब एक रोचक संवाद पढ़ते हैं —

www.onepointlearning.com
© NCERT not to be republished
One Point Learning
Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

"इतना-सा, उतना-सा, जितना-सा और कितना-सा" शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए और उनके अर्थ भी समझाइए। फिर सोचिए — सलमा को राजू जितने रुपए मिल पाएँगे।

अब नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाकर सलमा की सहायता कीजिए:

शब्द	अर्थ	वाक्य
इतना-सा	बहुत छोटा या बहुत कम मात्रा में।	मुझे इतना-सा टॉफी का टुकड़ा ही मिला।
उतना-सा	ठीक वही मात्रा या सीमा।	मुझे उतना-सा काम ही करना था जितना तुमने कहा था।
जितना-सा	आवश्यकता के अनुसार।	मुझे जितना-सा खाना चाहिए था, उतना मिल गया।
कितना-सा	आश्चर्य जताने के लिए प्रयोग होता है।	उसने कितना-सा अच्छा काम किया और सब खुश हो गए।

पाठ से आगे

पक्षी भोजन की खोज में अपने घोंसले से बाहर उड़ते हैं। यह जानना रोचक होगा कि कौन-सा पक्षी क्या खाता है। नीचे कुछ पक्षियों के नाम दिए गए हैं। पता लगाइए कि ये पक्षी क्या खाते हैं:

पक्षियों के नाम	पक्षियों का भोजन
बाज	छोटे जीव-जंतु, चूहे, सांप आदि
हंस	जलीय पौधे, मछलियाँ, दाना आदि
तोता	फल, बीज, हरी सब्ज़ियाँ
बगुला	मछलियाँ, छोटे जलीय जीव
कबूतर	अनाज के दाने, चावल, बाजरा आदि
उल्लू	चूहे, छोटे पक्षी, कीड़े-मकोड़े

कलाकारी

चित्र बनाना, गाना और नृत्य करना सभी को पसंद होता है। घोंसले से झाँकता हुआ छोटा पक्षी, हरे-भरे पेड़ की शाखाओं पर बैठा पक्षी, और नीले आकाश में पंख फैलाकर उड़ता हुआ पक्षी — यह सब बहुत प्यारे लगते हैं।

अब आप भी नीले आकाश में उड़ते हुए पक्षियों का चित्र बनाइए। जब चित्र तैयार हो जाए, तो आप उसे पकड़कर एकल या सामूहिक नृत्य कर सकते हैं या अपने मनपसंद गीत पर भाव-नृत्य प्रस्तुत कर सकते हैं। आप इन चित्रों को अपनी कक्षा या गलियारे में प्रदर्शित भी कर सकते हैं।

कविता पंक्तियाँ:

सूरज एक, चंदा एक, तारे अनेक, एक तितली, अनेक तितलियाँ,
एक तिलहरी, अनेक तिलहरियाँ, एक चिड़िया, अनेक चिड़ियाँ।

www.onepointlearning.com
One Point Learning
Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

उत्तर:

आनंदमयी गतिविधि

1. नीचे दिए गए अक्षर-जाल (शब्द-पहेली) में पक्षियों के नाम छिपे हुए हैं। उन्हें खोजिए और प्रत्येक पक्षी के बारे में एक वाक्य में जानकारी लिखिए।

उत्तर:

नी	ल	कं	ठ	ती
मै	ब	त	ख	त
ना	क	बू	त	र
ची	ल	गौ	रै	या
बु	ल	बु	ल	बा
सा	र	स	बा	ज

नीलकंठ	मैना	बुलबुल
सारस	बाज	कबूतर
चील	गौरैया	तीतर

जानकारी:-

1. नीलकंठ – यह एक सुंदर नीले रंग का पक्षी होता है, जिसे भगवान शिव का वाहन भी माना जाता है।
2. मैना – यह बोलने की नकल करने में माहिर होती है और मीठा बोलती है।
3. बतख – यह जल पक्षी है जो पानी में तैरता है और 'क्वैक क्वैक' की आवाज करता है।
4. कबूतर – यह सफेद या भूरे रंग का होता है और शांति का प्रतीक माना जाता है।
5. गौरैया – यह एक छोटी, प्यारी और चहकने वाली घरेलू चिड़िया है।
6. बुलबुल – यह एक सुंदर आवाज में गाने वाला पक्षी होता है।
7. सारस – यह लंबी टाँगों और लंबी गर्दन वाला पक्षी है, जो अक्सर जोड़ों में देखा जाता है।
8. बाज – यह एक शिकारी पक्षी है, जिसकी नजर बहुत तेज़ होती है।

www.onepointlearning.com
One Point Learning

2. जब शिशु पक्षी चहचहाते हैं, तो एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है। आइए, हम भी शिशु पक्षियों की तरह चहचहाएँ।

सभी बच्चे अपनी एक हथेली अपने होठों पर रखें और मिलकर "चीं-चीं" की आवाज़ निकालें। ऐसा लगेगा जैसे आप पेड़ की शाखाओं पर बैठे शिशु पक्षी बन गए हैं और चहचहा रहे हैं। अब बस पक्षियों की इस मधुर चहचहाहट को सुनिए और उसका आनंद लीजिए।

पक्षियों की आवाज़ निकालना और सुनना बहुत ही मज़ेदार होता है। तो चलिए, अब हम बारी-बारी से किसी भी पक्षी की आवाज़ निकालें, और तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत करें!

उत्तर : जब पक्षी चहचहाते हैं...

हम सभी बच्चों ने अपनी हथेली को अपने होठों पर रखा और "चीं-चीं" की मधुर ध्वनि निकाली।
ऐसा लगा जैसे हम सब छोटे-छोटे पक्षी बन गए हैं, जो पेड़ों की शाखाओं पर बैठकर चहचहा रहे हैं।

- कुछ बच्चों ने बुलबुल की आवाज़ निकाली – "टिर्र-टिर्र",
- कुछ ने तोते की आवाज़ निकाली – "टक-टक",
- और किसी ने मोर की आवाज़ भी निकाली – "कांव-कांव"।

हर बच्चे की आवाज़ पर हमने तालियों से उसका स्वागत किया।
यह गतिविधि बहुत ही आनंदमयी और मज़ेदार रही।
हमें ऐसा लगा जैसे हम सचमुच एक जंगल के बीच पक्षियों की टोली में शामिल हो गए हों।

3. नीचे कुछ पक्षियों से संबंधित पहेलियाँ दी गई हैं। इन पहेलियों का मिलान उपयुक्त चित्रों या पक्षियों के नाम से कीजिए —

उत्तर : 1. चमगादड़
2. कोयल
3. तोता
4. उल्लू

www.onepointlearning.com
One Point Learning
Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

बोलिए फटाफट

नीचे कुछ रोचक और चुनौतीपूर्ण पहेलियाँ दी गई हैं। शीघ्रता से उनका उत्तर दीजिए —

उत्तर :

परिवार हरा, हम भी हरे,
एक थैली में तीन-चार भरे।

मटर

एक लाठी की अजब कहानी
उसके भीतर मीठा पानी।

गन्ना

एक पक्षी ऐसा,
जिसकी दुम पर पैसा।

मोर

लाल डिबिया, पीले खाने,
भीतर रखे मोती के दाने।

अनार

जाती हूँ मैं हर जगह,
पर हिलती नहीं किसी भी तरह।

सड़क

www.onepointlearning.com
© NCERT not to be republished
One Point Learning
Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com